1. प्रदेश की परिभाषा
(Definition of Region)

प्रदेश भूगोल की मौलिक संकल्पनाओं में से एक है। भौगोलिक चिन्तन के इतिहास में भौगोलिक अध्ययन के केन्द्रीय तत्व के रूप में यह दीर्घ काल तक मान्य रहा है। अत्यधिक व्यवहृत तथा सुपरिचित होते हुए भी प्रदेश को सही-सही शब्दों में परिभाषित करना कठिन है। भौगोलिक चिन्तन की आधारभूत तथा केन्द्रीय संकल्पना होने के कारण प्रदेश को परिभाषित करने के प्रयास निरन्तर किये जाते रहे हैं। विभिन्न विद्वानों ने भिन्न-भिन्न संदर्भों में प्रदेश की अलग-अलग परिभाषाएं की हैं। प्रदेश का अर्थ अध्ययन विषय के स्वरूप तथा अध्येता की व्यक्तिगत मान्यताओं के अनुसार परिवर्तनशील रहा है।

भौगोलिक अध्ययन की दो प्रधान विधियाँ हैं — (1) क्रमबद्ध विधि (systematic method) और (2) प्रादेशिक विधि (regional method)। इस आधार पर भूगोल को दो वर्गों में विभक्त किया जाता है — (1) क्रमबद्ध भूगोल, और (2) प्रादेशिक भूगोल। क्रमबद्ध भूगोल (Systematic geography) के अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र को एक इकाई मानकर उसके विभिन्न भौगोलिक तत्वों या प्रकरणों (topics) का क्रमबद्ध रूप से अध्ययन किया जाता है। इसके विपरीत प्रादेशिक भूगोल (Regional geography) में किसी क्षेत्रीय इकाई (अध्ययन क्षेत्र) के विभिन्न खण्डों (प्रदेशों) का अध्ययन पृथक्-पृथक् किया जाता है। विश्व के क्रमबद्ध भूगोल में सम्पूर्ण विश्व को एक अध्ययन इकाई मानकर विभिन्न भौगोलिक उपादानों या प्रकरणों का क्रमबद्ध विश्लेषण किया जाता है जबकि प्रादेशिक भूगोल के अन्तर्गत विश्व को विभिन्न प्रदेशों में विभक्त करके उनका अलग-अलग भौगोलिक अध्ययन किया जाता है।

प्रदेश एक क्षेत्रीय इकाई होता है जिसके अन्तर्गत कुछ या अधिकांश भौगोलिक तत्वों या प्रकरणों (topics) की समानता या समांगता पायी जाती है। यह भूमि का एक खण्ड या क्षेत्रीय इकाई होता है जिसके अन्तर्गत विशिष्ट अथवा समान अभिलक्षण (unique or similar characters) पाये जाते हैं और वह अपने विशिष्ट अभिलक्षणों द्वारा अन्य भूभागों से भिन्नता रखता है। प्रदेश की कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाएं निम्नलिखित हैं—

1. फ्रांसीसी मानव भूगोल के संस्थापक **वाइडल डी ला ब्लाश** (Vidal de La Blache) के अनुसार, "प्रदेश का आशय एक ऐसे भौगोलिक क्षेत्र से है जहाँ एक-दूसरे से सर्वथा भिन्न जैविक इकाइयाँ कृत्रिम ढंग से वहाँ संग्रहीत किये जाने के पश्चात् स्थानीय पर्यावरण में परस्पर सह-अस्तित्व के फलस्वरूप परस्पर संयुक्त हो जाती हैं जिसके आधार पर सम्बद्ध क्षेत्र की अलग पहचान बन जाती है।"

2. ब्रिटिश भूगोलवेत्ता **हरबर्टसन** (A. J. Herbertson) के अनुसार, "प्रदेश वह भौगोलिक इकाई है जिसमें भूमि, जल, वायु, पशु, पेड़-पौधे तथा मनुष्य क्षेत्रीय स्तर पर परस्पर इतने घनिष्ट और विशिष्ट सम्बंध में संयुक्त हो गये हैं कि उनसे सम्पूर्ण की विलग तथा अनूठी पहचान बन गयी है।"

3. अमेरिकी भूगोलवेत्ता **फेनेमैन** (N. M. Phenemann) के अनुसार, " प्रदेश वह भौगोलिक इकाई है जिसमें सर्वत्र स्थलाकृतिक समांगता पायी जाती है और जो आस-पास के क्षेत्रों से इस दृष्टि से सर्वथा भिन्न है।"

4. अमेरिकी भूगोलवेत्ता **रिचर्ड हार्टशोर्न** (Rechard Hartshorne) के अनुसार, ''प्रदेश एक ऐसा क्षेत्र होता है जिसकी विशिष्ट स्थिति होती है जो किसी प्रकार से अन्य क्षेत्रों से भिन्न होता है और जो उतनी ही दूरी तक फैला होता है जितनी दूरी तक वह भिन्नता पायी जाती है।''

5. प्रादेशिक भूगोल की प्रकृति, स्वरूप तथा उसकी प्रगति की समीक्षा करते हुए अमेरिकी भूगोलवेत्ता **डी० ह्वीटलसी** ने प्रदेश को इस प्रकार परिभाषित किया है, ''क्षेत्रीय समानता के आधार पर परिभाषित पृथ्वी की सतह (भूतल) के किसी भी प्रखण्ड को प्रदेश की संज्ञा दी जा सकती है।''

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि **एक प्रदेश भूतल (earth's surface) का एक प्रखण्ड या इकाई होता है जिसके अन्तर्गत विशिष्ट अथवा समान अभिलक्षण पाये जाते हैं। अपने विशिष्ट अभिलक्षणों के कारण एक प्रदेश अपने समीपवर्ती, संलग्न या अन्य क्षेत्रों से भिन्नता रखता है।**

2. प्रादेशिक संकल्पना का विकास
(Evolution of Regional Concept)

प्राचीन यूनानी सभ्यता के समय से ही क्षेत्रीय वर्णन भौगोलिक अध्ययन का महत्वपूर्ण विषय रहा है किन्तु आधुनिक भौगोलिक अध्ययन में प्रादेशिक पद्धति का आरंभ उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभिक दशक से हुआ। अठारहवीं शताब्दी के अत तक भौगोलिक अध्ययन मुख्य रूप से पृथ्वी के विभिन्न स्थानों की स्थिति निर्धारण तथा मानचित्रण विधियों के विकास पर केन्द्रित था। उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में आधुनिक भूगोल के संस्थापक दो जर्मन भूगोलवेत्ताओं **अलेक्जेण्डर वान हम्बोल्ट** तथा **कार्ल रिटर** के साथ ही अनेक जर्मन भूगोलवेत्ताओं ने भूतल पर स्थित भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में स्थित विभिन्न प्रकार के तत्वों के पारस्परिक सह-अस्तित्व जनित भूदृश्य तथा क्षेत्रीय समग्रता के विश्लेषण हेतु सैद्धान्तिक आधार विकसित करने का महत्वपूर्ण प्रयास किया। हम्बोल्ट और रिटर के परवर्ती विद्वानों में जर्मन भूगोलवेत्ता रिचथोफेन का योगदान सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है।

आधुनिक भूगोल में प्रादेशिक तथा क्षेत्रीय स्तर पर पृथ्वी के परिवर्तनशील स्वरूप के अध्ययन के लिए उसे लघु क्षेत्रीय इकाइयों में विभाजन की पद्धति सर्वप्रथम जर्मन भूगोलवेत्ता **फर्डीनण्ड वान रिचथोफेन** (1833-1905) ने 1883 में प्रतिपादित की थी। बाद में अमेरिकी विद्वान **रिचर्ड हार्टशोर्न** ने अपनी पुस्तक **'नेचर आफ ज्योग्राफी'** (1939) के द्वारा अंग्रेजी भाषी देशों में इस पद्धति का व्यापक प्रचार किया। इस पुस्तक के प्रभाव से प्रादेशिक पद्धति शीघ्र ही भौगोलिक अध्ययन की सर्वमान्य पद्धति के रूप में स्थापित हो गयी। भौगोलिक अध्ययन में प्रादेशिक पद्धति के विकास में **अल्फ्रेड हेटनर** का महत्वपूर्ण योगदान है। हेटनर रिचथोफेन के सहयोगी और शिष्य थे। भौगोलिक अध्ययन में क्षेत्रीय परिदृष्टि की प्रेरणा उन्हें रिचथोफेन से ही प्राप्त हुई थी। भौगोलिक चिन्तन की समीक्षा करते हुए हेटनर ने जोर देकर कहा कि भूगोल मूलतः पृथ्वी का क्षेत्रीय विज्ञान है। उन्होंने स्पष्ट किया कि **भूगोल भूतल की क्षेत्रीय परिवर्तनशीलता (Areal Variability) पर केन्द्रित अध्ययन है।** भूगोल यह जानने का प्रयास करता है कि पृथ्वी की भिन्न-भिन्न इकाइयाँ एक दूसरे से किस प्रकार भिन्न हैं? ''भूगोल प्रत्येक क्षेत्रीय इकाई के सविस्तार अध्ययन के आधार पर विश्व स्तर पर पृथ्वी के तुलनात्मक अध्ययन का प्रयास करता है। अतः भूगोल एक साथ ही पृथ्वी का प्रादेशिक वर्णन भी है और उसका सामान्य (क्रमबद्ध) विज्ञान थी। परन्तु अध्ययन का उद्देश्य चाहे जो भी हो पृथ्वी के अलग-अलग क्षेत्रीय उपांगों के सविस्तार अध्ययन के आधार पर सम्पूर्ण पृथ्वी तल का वर्णन अथवा पृथ्वी की सतह पर पाये जाने वाले भिन्न-भिन्न प्रकार के तत्वों के विश्व वितरण के प्रारूपों की तुलनात्मक व्याख्या के आधार पर पृथ्वी की सम्पूर्ण सतह का क्रमबद्ध अध्ययन-दोनों ही स्थितियों में भौगोलिक अध्ययन का केन्द्र बिन्दु पृथ्वी की सतह पर पाये जाने वाले भिन्न-भिन्न प्रकार के तत्वों की परिवर्तनशील पारस्परिकता है। एक स्वतंत्र विज्ञान के रूप में भूगोल की यही मूल पहचान है। (आर० पी० दीक्षित, 2000)।''

3. प्रादेशीकरण के मूलभूत सिद्धान्त
(Basic Principles of Regionalization)

भूगोल में पृथ्वी के तल (भूतल) को प्रादेशिक इकाइयों में विभक्त करके अध्ययन करने की परम्परा बहुत पुरानी है किन्तु बीसवीं शताब्दी के मध्य तक प्रादेशीकरण के लिए स्पष्ट दिशा निर्देशों का विकास नहीं हो सका था। प्रादेशीकरण की प्रक्रिया वैज्ञानिक वर्गीकरण तथा तार्किक विभाजन (logical division) का ही एक रूप है अतः वैज्ञानिक अध्ययन के आधारभूत सिद्धान्तों के आधार पर प्रादेशीकरण के मौलिक सिद्धान्तों की खोज की जा सकती है। इस संदर्भ में ग्रिग (D. Grigg, 1965) ने महत्वपूर्ण व्याख्या प्रस्तुत करते हुए प्रादेशीकरण के लिए निम्नलिखित सिद्धान्तों की चर्चा किया है—

1. वर्गीकरण की समस्या एक सापेक्ष प्रक्रिया है। प्रत्येक समस्या के पृथक् वर्गीकरण की आवश्यकता होती है। एक समस्या के विश्लेषण के लिए किया गया वर्गीकरण अन्य समस्या के वर्गीकरण के लिए समान रूप से उपयोगी नहीं हो सकता।

2. विभिन्न प्रकार के तत्वों के अध्ययन के लिए प्रत्येक की प्रकृति के अनुसार पृथक्-पृथक् प्रादेशीकरण की आवश्यकता होती है। किसी प्रादेशीकरण की एक ही योजना में कई प्रकार के तत्वों को सम्मिलित नहीं किया जा सकता।

3. प्रादेशीकरण की कोई भी योजना अंतिम नहीं हो सकती। कालान्तर से सम्बंधित तत्वों के विषय में नवीन सूचनाएं मिलती रहती हैं जिसके परिणामस्वरूप प्रादेशीकरण में संशोधन आवश्यक होता है।

4. वर्गीकरण के लिए उन विशेषताओं (गुणों) का चयन किया जाना चाहिए जो सम्बद्ध तत्वों की मौलिक विशेषताएं हों। इसके अभाव में प्रादेशीकरण की योजना व्यावहारिक दृष्टि से उपयोगी नहीं हो सकती।

5. प्रादेशिक इकाइयों का निर्धारण इस प्रकार से किया जाना चाहिए कि सम्पूर्ण क्षेत्र किसी न किसी प्रदेश (क्षेत्र) के अन्तर्गत विभाजित (सम्मिलित) हो और कोई स्थान या क्षेत्र किसी एक ही प्रदेश का अंग हो।

6. तार्किक विभाजन (logical division) के लिए आवश्यक है कि विभाजन का सम्पूर्ण कार्य प्रत्येक चरण में एक ही तार्किक सिद्धान्त पर आधारित हो।

7. प्रादेशीकरण के लिए पृथक् करने वाली विशेषता का चुनाव करते समय ध्यान रखना चाहिए कि चयनित विशेषता अपेक्षित समस्या के उद्घाटन तथा समाधान के लिए महत्वपूर्ण तथा उपयोगी हो।

8. प्रादेशिक पदानुक्रम में उच्चश्रेणी के प्रदेशों के सीमांकन में प्रयुक्त विशेषताएं निम्न श्रेणी के प्रदेशों के सीमांकन हेतु प्रयुक्त विशेषताओं की तुलना में अधिक स्थूल तथा महत्वपूर्ण होनी चाहिए। अन्य शब्दों में, बृहत् प्रदेशों का निर्धारण स्थूल विशेषता के आधार पर और लघु प्रदेशों का निर्धारण सूक्ष्म विशेषता के आधार पर किया जाना चाहिए।

4. प्रदेशों के प्रकार
(Types of Regions)

प्रादेशिक संकल्पना की विवेचना करते हुए अमेरिकी भूगोलवेत्ता डी० ह्वीटलसी (D. Whittlesey, 1956) ने बताया कि एक प्रदेश में कम से कम 16 प्रकरणों या विषयों (topics) का अध्ययन किया जाता है। प्रदेश के सीमांकन में इन्हीं विषयों या तत्वों को आधर बनाया जाता है। ह्वीटलसी के अनुसार जितने भौगोलिक तत्व हैं उतने प्रकार के प्रदेश हो सकते हैं तथा उनके पारस्परिक सहसंबंध के आधार पर भी प्रदेश की कल्पना की जा सकती है। इस प्रकार तत्वों के आधार पर प्रदेश की निम्नलिखित चार श्रेणियां हो सकती हैं—

(1) एकल विषय प्रदेश (Single topic region)—जब भूतल पर केवल एक ही तत्व के वितरण का अध्ययन किया जाता है तब उसके वितरण सम्बंधी भिन्नता (क्षेत्रीय भिन्नता) के अनुसार विभिन्न प्रदेशों

का जन्म होता है। ऐसे प्रदेश को एकल विषय प्रदेश कहते हैं जैसे मृदा प्रदेश, वर्षा प्रदेश, वनस्पति प्रदेश, भाषा प्रदेश आदि।

(2) बहुल विषय प्रदेश (Multiple topic region)—जब किसी प्रदेश के सीमांकन का आधार एक तत्व नहीं बल्कि कई तत्व होते हैं तब ऐसे प्रदेश को बहुल विषय प्रदेश या संयुक्त प्रदेश (composite region) की संज्ञा दी जाती है। प्राकृतिक प्रदेश, आर्थिक प्रदेश, जलवायु प्रदेश आदि इसके दृष्टान्त हैं।

(3) सम्पूर्ण विषय प्रदेश (Total topic region)—यदि भतल के किसी प्रदेश में समस्त तत्व (ह्वीटलसी के अनुसार 16 तत्व) किसी दूसरे प्रदेश के उन (16) तत्वों से क्रमशः मेल खाते हैं तो ऐसे प्रदेश को सम्पूर्ण विषय प्रदेश कहा जाता है। ऐसे प्रदेश बहुत कम मिलते हैं।

(4) कम्पेज (Compage)—कम्पेज ऐसे प्रदेश को कहते हैं जो कई तत्वों से मिलकर बनता है किन्तु इसमें तत्वों का महत्व-क्रम आवश्यक नहीं होता है। आवश्यक क्रम में तत्वों की संख्या परिवर्तनीय होती है। कम्पेज के निर्धारण में जिस तत्व की आवश्यकता होती है या जो तत्व महत्वपूर्ण होता है उसे सम्मिलित किया जाता है तथा अनावश्यक तत्वों को छोड़ दिया जाता है। इस प्रकार कम्पेज में सभी तत्वों का महत्व समान नहीं होता है। अतः प्रत्येक तत्व का वर्णन महत्व के क्रमानुसार किया जाता है। यही कारण है कि इसमें व्यक्तिनिष्ठता बहुत अधिक पायी जाती है क्योंकि कम्पेज तथा उसकी सीमाएं विभिन्न व्यक्तियों के अनुसार बदलती रहती हैं।

कम्पेज बहुल विषय प्रदेश (multiple topic region) और सम्पूर्ण विषय प्रदेश (total topic region) के मध्य की दशा है जिसमें अध्ययन तत्वों (विषयों) की संख्या घटती बढ़ती रहती है तथा उनके महत्वक्रम भी बदलते रहते हैं।

अमेरिकी भूगोलवेत्ता संघ (Association of American Geographers) द्वारा **डी० ह्वीटलसी** के नेतृत्व में गठित समिति ने प्रादेशिक संकल्पना की विस्तृत विवेचना करते हुए समस्त प्रकार की प्रादेशिक इकाइयों को दो बृहत् समूहों में विभक्त किया है—(1) लाक्षणिक या समरूप प्रदेश (formal or uniform region), और (2) कार्यात्मक या केन्द्रीय प्रदेश (functional or nodal region)। लाक्षणिक या समरूप प्रदेश का सीमांकन चुने गये तत्वों या सम्बंधों के आधार पर किया जाता है, अतः इसके अन्तर्गत सीमित प्रकार की क्षेत्रीय समरूपता पायी जाती है, जैसे जलवायु प्रदेश, मृदा प्रदेश, कृषि प्रदेश आदि। इसके विपरीत कार्यात्मक या केन्द्रीय प्रदेश का सीमांकन स्थानीय स्तर या विद्यमान कार्यात्मक सम्बंधों के आधार पर किया जाता है। नगर प्रदेश इसका उत्कृष्ट उदाहरण है।

ब्रिटिश भौगोलिक संघ (British Geographical Association) ने विश्व के प्रादेशीकरण की व्याख्या करने के लिए एक समिति नियुक्त किया था जिसके सदस्य थे राक्सबी, स्टाम्प, अन्स्टेड और मायर्स। इस समिति ने 1937 में एक लेख प्रकाशित किया जिसका शीर्षक था **"विश्व के प्रदेशों का वर्गीकरण"** (Classification of Regions of the World)। इस समिति ने प्रदेशों को दो वर्गों में विभक्त किया—(1) **जननिक प्रदेश** (generic region), और (2) **विशिष्ट प्रदेश** (specific region)। जननिक प्रदेश किसी वर्ग अथवा प्रकार का प्रतिनिधित्व करते हैं और भूतल के अनेक भागों में पाये जा सकते हैं। जननिक प्रदेश सामान्य विशेषता वाले होते हैं और एक से अधिक क्षेत्रों में पाये जाते हैं। इसके विपरीत विशिष्ट प्रदेश अपने प्रकार का अनूठा (अकेला) प्रदेश होता है जिसके अन्य उदाहरण नहीं पाये जाते हैं। इनकी भौगोलिक विशेषताएं बिल्कुल अलग प्रकार की होती हैं।

जननिक या सामान्य प्रदेश किसी एक तत्व या विशिष्ट सम्बंध के आधार पर निर्धारित क्षेत्रीय इकाइयां होते हैं। इसके लिए भूतल के विभिन्न भागों में एक ही आधार पर निर्धारित विभिन्न प्रकार के मिलते-जुलते क्षेत्रों की पहचान की जाती है। इसके विपरीत **विशष्टि प्रदेश** सर्वपक्षीय (total topic) या सर्वतत्वीय (total feature) क्षेत्रीय इकाई होता है जो एक ही स्थान या क्षेत्र में विद्यमान समस्त प्रकार के भौगोलिक (प्राकृतिक तथा मानवीय) तत्वों के पारस्परिक सह-अस्तित्व पर आधारित होता है। स्वभाव से अनूठी क्षेत्रीय इकाई होने के कारण विशिष्ट प्रदेशों का तुलनात्मक अध्ययन नहीं किया जा सकता।

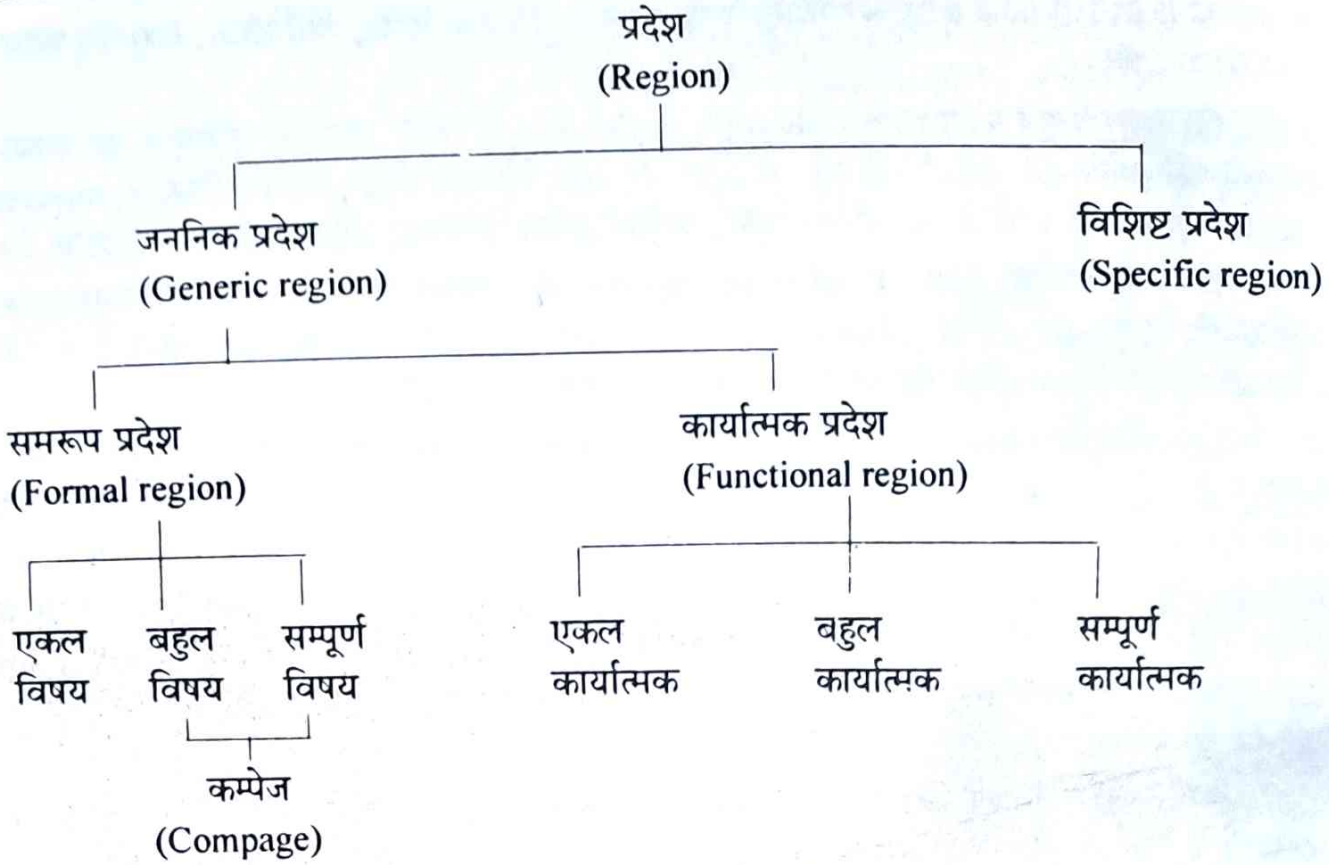

5. प्रमुख जननिक प्रदेश
(Major Generic Regions)

जननिक प्रदेश तत्वगत समानता पर आधारित होते हैं और भूतल पर एक से अधिक क्षेत्रों में पाये जाते हैं। अतः सही अर्थ में जननिक प्रदेश ही प्रादेशिक भूगोल की विषय सूची प्रस्तुत करते हैं। जननिक प्रदेशों को दो उपवर्गों में विभक्त किया जाता है—(1) समरूप या लाक्षणिक प्रदेश (Formal or Uniform region) और (2) कार्यात्मक या केन्द्रीकृत प्रदेश (Functional or Nodal region)। इनका विवरण अग्रांकित है—

(1) समरूप या लाक्षणिक प्रदेश
(Formal or Uniform Regions)

समरूप प्रदेश की सीमाएं कुछ चुने गये तत्वों या सम्बंधों की समानता या समरूपता (uniformity) के आधार पर निर्धारित की जाती है। ऐसे प्रदेशों में सामान्यतः सीमित प्रकार की क्षेत्रीय समरूपता विद्यमान होती है। इसका सीमांकन आवश्यकता एवं उद्देश्य के अनुसार एक तत्व, अनेक तत्वों या सम्पूर्ण तत्वों की समानता के आधार पर किया जा सकता है। भौतिक प्रदेश, प्राकृतिक प्रदेश, आर्थिक प्रदेश, सांस्कृतिक प्रदेश, भौगोलिक प्रदेश आदि समरूप प्रदेश के उदाहरण हैं जिनका निर्धारण कई तत्वों या उपादानों (multiple topics) के आधार पर किया जाता है। एकल तत्व की समानता के आधार पर निर्धारित प्रदेशों में जलवायु प्रदेश, मृदा प्रदेश, वनस्पति प्रदेश, भाषा प्रदेश, कृषि प्रदेश, आर्थिक प्रदेश आदि उल्लेखनीय हैं। प्रादेशिक भूगोल में अधिकांश प्रारंभिक अध्ययन समरूप प्रदेश से ही सम्बंधित थे। 1950 तक इसी प्रकार के अध्ययन अधिक प्रचलित थे।

जिन समरूप प्रदेशों में एक से अधिक तत्वों की समानता या समरूपता पायी जाती है वे बहुल विषय प्रदेश (multiple topic regions) होते हैं। प्रदेश के सीमांकन में जितने तत्वों को आधार बनाया जाता है वे सभी समरूप प्रदेशों में लगभग समानता रखते हैं। विभिन्न तत्व संयोगों के आधार पर निर्धारित ऐसे प्रदेश विविध प्रकार के होते हैं जिनमें से कुछ प्रदेशों का वर्णन अग्रांकित है।

(i) भौतिक प्रदेश (Physiographic Region)

भौतिक प्रदेश का सीमांकन सामान्यतः उच्चावच (relief) या स्थलाकृति (topography) की